॥ चण्डी ध्वजं ॥

अस्य श्री चण्डी ध्वज स्तोत्र महामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ महालक्ष्मीर्देवता श्रां बीजं , श्रीं शक्तिः, श्रूं कीलकं मम वाञ्छितार्थ फल सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥ ध्यानं॥

श्रीं नमो जगत् प्रतिष्ठायै देव्यै भूत्यै नमो नमः
परमानन्दरूपिण्यै नित्यायै सततं नमः ॥

नमस्ते अस्तु महादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि
रक्ष मां शरणं देवि धन धान्य प्रदायिनि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्ते अस्तु महाकाली परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्ते अस्तु महालक्ष्मी परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

महासरस्वती देवि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो ब्राह्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो माहेश्वरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्ते अस्तु कौमारि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्ते वैष्णवी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्तेऽस्तु च वाराहि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नारसिंही नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्तेस्तु इन्द्राणि परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो नमस्ते चामुण्डे परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो नमस्ते नन्दायै परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

रक्तदन्ते नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्तेऽस्तु महादुर्गे परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

शाकम्भरि नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

शिवदूति नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्ते भ्रामरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो नवग्रहे देवि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नवकूटमहादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

स्वर्णपूर्णे नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

श्रीसुन्दरी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमो भगवति देवि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

दिव्ययोगि नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्तेऽस्तु महादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

नमस्तेऽस्तु सावित्रि परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

रक्ष मां शरण्ये देवि धन धान्य प्रदायिनि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

जयलक्ष्मि नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

मोक्षलक्ष्मि नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा॥

चण्डीध्वज मिदं स्तोत्रं सर्वकामफलप्रदम्
राजते सर्वजन्तूनां वशीकरणसाधनम् ॥

For correction please send to samir.bishoyi@gmail.com